Did the Apostles believe Jesus is God?

क्या प्रेरित विश्वास करते थे कि यीशु परमेश्वर हैं?

नासरत के यीशु ने अपने जीवन के प्रारम्भिक 30 वर्ष गुमनामी के अंधेरे में फिलिस्तीन के एक छोटे से गाँव में एक ऐसे बढ़ई के रूप में कार्य करते हुए व्यतीत किये जो जगप्रसिद्ध नहीं था। परन्तु आगामी तीन वर्षों में उसके मुख से वे वचन निकले जिसने उन सभी को हैरत में डाल दिया जिन्होंने उसे सुना था, वे वचन जिन्होंने अन्तोगत्वा हमारे संसार को बदल डाला। उसने ऐसे आश्चर्यकर्म भी कर डाले जो कोई व्यक्ति न कर सका था, तूफानों को शांत किया, रोगियों को चंगा किया, आँखों को ज्योति प्रदान की और यहाँ तक कि मृतकों को जीवित कर दिखाया।

परन्तु मसीहियों के अनुसार यीशु मसीह और अन्य सभी धार्मिक अगुवों के मध्य जो सबसे बड़ा अन्तर था वह ये कि उसने परमेश्वर होने का दावा किया (देखें, ''क्या यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया?'')। यदि उसके द्वारा किया गया यह दावा असत्य है तो सुसमाचार का सन्देश अपनी सारी विश्वसनीयता खो बैठता है। वह सन्देश यह है कि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि वह हमारे पापों के लिये अपना प्राण दे देने वाला एक ऐसा मनुष्य बन गया जो स्वयं हमें अनन्त जीवन प्रदान करता है। अतः यदि यीशु परमेश्वर नहीं है तो हम भी झूठा जीवन जीते आ रहे हैं।

कुछ धर्म तो यह शिक्षा देते हैं कि यीशु एक रचे गये प्राणी थे और पुस्तकें जैसे कि द डा विन्सी कोड बताती हैं जो यह कहकर सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकें बन गयीं कि न तो यीशु न ही उनके चेलों ने यह सिखाया कि वे परमेश्वर हैं। (देखें ''मोनालिसा की कटु मुस्कान'')।

इन प्रहारों से मसीह के ईश्वरत्व पर यह प्रश्न उठते हैं कि लगभग 2000 वर्ष पूर्व ऐसा क्या हुआ जिसके कारण मसीहियत यह दावा करती है कि इसके संस्थापक यीशु मसीह ही दरअसल परमेश्वर हैं। ''डिड जीसस क्लेम टू बी गॉड?'' (क्या यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया?) में हम पाते हैं कि नये नियम से प्राप्त प्रमाण ठोस रूप से संकेत करते हैं कि यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया, परन्तु क्या वे चश्मदीद गवाह जिन्होंने यीशु के वचनों को सुना और उसके आश्चर्यकर्मों को देखा इस बात से सहमत हैं कि हरेक रीति से वह अपने पिता के तुल्य हैं? अथवा उनका केवल ऐसा सोचना था कि यीशु मात्र रचे गये सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं या मूसा के समान एक महान् भविष्यद्वक्ता हैं?

कल्पना से सत्य की खोज के अनुक्रम में, हमें आवश्यकता है कि हम प्रेरितों द्वारा कहे गये उन वचनों पर पुनः दृष्टिपात करें जो उस समय वहाँ उपस्थित थे जब यीशु इस पृथ्वी पर

चला–फिरा करते थे और उनकी उन गवाहियों को देखें जो उन्होंने अपनी देखी और सुनी गयी बातों पर लिखीं।

चश्मदीद गवाह

यीशु ने बहुत ही साधारण मनुष्यों को अपना चेला होने के लिये चुना था। उन्होंने उनके साथ अपने विषय में शिक्षा देते हुए और परमेश्वर के गूढ़ सत्य की व्याख्या उन्हें करते हुए तीन वर्ष व्यतीत किये। उन तीन वर्षों के दौरान यीशु ने असंख्य आश्चर्यकर्म किये, निर्भीक दावे किये और पूर्णतः धर्मी जीवन व्यतीत किया। बाद में, इन्हीं चेलों ने यीशु के बहुतेरे वचनों और कार्यों के विषय में लिखा। नये नियम के इन वृत्तान्तों को बहुतायत से विश्वासयोग्य कहा जाता रहा है, इसकी विश्वसनीयता की पहचान के लिये दूर–दूर से खोजे गये दूसरे अन्य प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाणों को देखा जा सकता है। (देखें जीसस.डॉक)

विद्वानों ने इस बात पर टिप्पणी की है कि नया नियम चेलों की इस निष्पक्षता को प्रदर्शित करता है कि यीशु पूर्णतः विश्वासयोग्य हैं। उन्होंने जो कुछ देखा और सुना उसकी जानकारी सत्यनिष्ठा से देते हैं। इतिहासकार विल ड्यूरेन्ट टिप्पणी करते हैं :

‘‘ये मनुष्य शायद ही इस स्वभाव के थे कि उनमें से किसी ने भी इस संसार को बदल डालने का चुनाव किया होगा। सुसमाचार वास्तविक रूप में उनके गुणों की भिन्नता को दर्शाता है और सच्चाई से उनके दोषों को उजागर करता है।’’[1]

जब उनका सामना प्रथम बार यीशु से हुआ तो प्रेरितों को इस बात का तनिक भी आभास नहीं हुआ था कि वे कौन हैं, कुछ भी हो जैसे ही उन्होंने उनके मुख से निकले वचनों को सुना और अन्धे के नेत्रों की ज्योति को पुनः प्रदान करते देखा और मृतकों को जीवित करते देखा होगा तो संभवतः उन्हें वह भविष्यवाणी याद आ गयी होगी कि मसायाह स्वयं परमेश्वर ही होगा। (यशायाह 9:6, मीका 5:2) परन्तु ज्यों ही उन्होंने उसे क्रूस पर की मृत्यु को प्राप्त होते देखा, यीशु उन्हें पराजित और सामर्थहीन प्रतीत हुआ। शायद ही उनके मनों में यह विचार कौंधा होगा कि निस्सन्देह जो क्रूस पर मृत्यु को प्राप्त हुआ वह यीशु ही परमेश्वर है।

कुह भी हो, उस अप्रिय घटना के घटने के तीन दिन पश्चात, वह व्यक्ति, जो क्रूस पर लटका हुआ सामर्थहीन प्रतीत होता था, आश्चर्यजनक रीति से अपने चेलों के समक्ष जीवित अवस्था में आ खड़ा हुआ और वह शारीरिक रूप से जी उठा था। उन्होंने उसे देखा, उसे छुआ, उसके साथ भोजन किया और इस संसार के सर्वोच्च अधिकारी के रूप में उसकी महिमान्वित उपस्थिति सहित उसे बातें करते सुना। शिमौन पतरस, जो कि यीशु के प्रिय शिष्यों में से एक था, और एक चश्मदीद गवाह था, लिखता है :

''कि उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई जब उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूँ और जब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यहीं वाणी आते सुना।'' (2 पतरस 1:16, 17 सन्देश)

परन्तु क्या इस तथ्य कि चेलों (प्रेरितों) ने परमेश्वर की महिमा को देखा और यीशु के माध्यम से परमेश्वर की वाणी सुनी, का तात्पर्य यह है कि उन्होंने उसकी उपासना परमेश्वर तुल्य की? नये नियम के विद्वान ए0एच0 मैकनाइल हमें उत्तर देते हैं :

''...... जब तक कि यीशु के जीवन का समापन एक अस्पष्ट असफलता और लज्जित अवस्था में नहीं हो जाता तब तक मसीहियों की महान् देह .... यहाँ वहाँ उपस्थित कोई एक व्यक्ति नहीं, परन्तु कलीसियाई झुण्ड .... इस मज़बूत टिकाऊ विश्वास से तुरन्त ही डिग नहीं पाया कि वह परमेश्वर थे।''[2]

अतः वे प्रेरित जिन्होंने नये नियम की घटनाओं को लिखा, क्या वास्तव में विश्वास करते थे कि यीशु परमेश्वर हैं अथवा क्या उन्होंने उसको एक रचे गये प्राणी के रूप में स्वीकारा? यदि उन्होंने यीशु का आदर परमेश्वर के रूप में किया तो क्या उन्होंने इस भूमण्डल के सृष्टिकर्त्ता के रूप में उन्हें स्वीकारा या कुछ कम? वे लोग जो यीशु के ईश्वरत्व को नकारते हैं, कहते हैं कि प्रेरित इस बात को सिखाते थे कि यीशु परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना हैं और केवल पिता ही सनातन परमेश्वर हैं। अतः उनके यीशु सम्बन्धित मतों को स्पष्ट करने के लिये, हम उनके कथनों की जाँच–पड़ताल, तीन प्रकार के प्रश्न पूछकर करेंगे :

1. क्या प्रेरित और आरंभिक मसीही यीशु की उपासना और उनसे प्रार्थना प्रभु जानकर करते थे?
2. क्या प्रेरित इस बात को सिखाते थे कि यीशु ही वह सृष्टिकर्ता हैं जिसके विषय में उत्पत्ति में लिखा है?
3. क्या प्रेरितों ने यीशु की उपासना संसार के सर्वप्रधान के रूप में की?

प्रभु

जब यीशु ऊपर उठा लिये गये, तो यहूदी और रोमी दोनों जाति के प्रेरित यीशु को ''प्रभु'' कहकर स्तब्ध रह गये।[3] और प्रेरितों ने बिना सोचे–विचारे ही यीशु की उपासना ऐसे करीं यहाँ तक कि प्रार्थना भी जैसे वह परमेश्वर हों। स्तिफनुस यह कहकर प्रार्थना करता रहा ''हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर'' जब वह पत्थरवाह करके मारा जा रहा था। (प्रेरितों के काम 7:59)

दूसरे अन्य विश्वासी जो कि मृत्यु से भयभीत थे शीघ्र ही स्तिफनुस के साथ हो लिये, ''और प्रतिदिन .... और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूके। (प्रेरितों के काम 5:42)। प्रेरितों, अधिकाँश उनमें से जो शहीद हो गये थे ने, अपने यीशु सम्बन्धी ज्ञान को कलीसियाई पिताओं के हाथों में सौंप दिया जिन्होंने उनके सन्देशों को अगली पीढ़ी में पहुँचाया।

इग्नेशस, प्रेरित यूहन्ना का एक शिष्य, यीशु के द्वितीय आगमन के विषय में लिखता है, ''उसे निहारो जो सारे समयों से परे है, उसे जो असीमित है, उसे जो अदृश्य है।'' पॉलीकार्प को लिखे एक पत्र में वह कहता है ''यीशु परमेश्वर हैं'' ''परमेश्वर देहधारी है'', और इफिसियों को वह लिखता है, ''..... साक्षात् परमेश्वर मनुष्य रूप में प्रकट होने को है, अनन्त जीवन के नवीनीकरण के लिये।'' (इफिसियों को लिखा इग्नेशस का एक पत्र 4:13)

96 ई0 बाद रोम के एक दयालु ने यीशु के ईश्वरत्व के विषय में यह कहते हुए शिक्षा दी, ''हमें नैतिक रूप से यीशु मसीह को परमेश्वर रूप में मान लेना चाहिए।'' (कुरिन्थियों 1:1 को दयालु का दूसरा पत्र)

पॉलीकार्प, यूहन्ना के एक और शिष्य ने यीशु की उपासना प्रभु के रूप में करने का प्रयास रोमी साम्राज्य के सामने किया था। जबकि उग्र भीड़ उसके लहू की माँग कर रही थी, रोमन न्यायाशीध माँग कर रहा था कि सीज़र को प्रभु स्वीकारा जाए, परन्तु पॉलीकार्प दण्द देने हेतु नियत स्थान तक गया अपेक्षा के विपरीत उसने यीशु का नाम प्रभु के स्थान पर पुकारते हुए प्रत्युत्तर में कहा,

''छियासी वर्षों से मैंने मसीह की सेवा की है और उन्होंने मेरे प्रति कभी कुछ गलत नहीं किया। मैं अपने उस राजा की निन्दा कैसे कर सकता हूँ जिसने मुझे बचाया?''[4]

जैसे–जैसे आरम्भिक कलीसिया उन्नति करती गयी, रहस्यवादियों और दूसरे अन्य मसीह विरोधी समूहों ने यह शिक्षा देना आरम्भ कर दिया कि यीशु एक रचे गये प्राणी थे, पिता की तुलना में तुच्छ। यह बात चौथी शताब्दी में एक प्रमुख व्यक्ति तक जा पहुँची जब एरिअस, लीबिया के एक प्रसिद्ध प्रचारक ने बहुत से अगुवों को यह विश्वास दिला दिया कि सम्पूर्ण रीति से यीशु परमेश्वर नहीं हैं। तब 325 ई0 में निकाया की महासभा में, कलीसियाई अगुवों ने इस मुद्दे कि क्या यीशु स्वयं सृष्टिकर्त्ता हैं अथवा केवल एक रचना हैं, का हल निकालने के लिये भेंट की।[5] इन कलीसियाई अगुवों ने एक लम्बे समय तक चलने वाली मसीही हृदय परिवर्तन सभा में और नये नियम की शिक्षाओं द्वारा संतुष्टि के साथ यह मान लिया कि यीशु सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर ही हैं।[6]

सृजनहार

उत्पत्ति में बाइबिल के परमेश्वर को एक छोटे से कण से लेकर अपनी अरबों आकाशगंगाओं की चमक से भरे अंतरिक्ष तक सब वस्तुओं के सृजनहार के रूप में दर्शाया गया है। अतः एक यहूदी के लिये यह सोचना कि एक स्वर्गदूत अथवा कोई दूसरा रचा गया प्राणी सृजनहार था, एक प्रतिकूल विचारधारा की बात रही होगी :

''यहोवा जो इस्राएल का पवित्र और उसका बनानेवाला है, वह यों कहता है, ... मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है .... सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।'' (यशायाह 45:11 अ, 12,13 ब)

तो क्या प्रेरित यीशु को सृष्टि के एक अंश के रूप में देखते थे अथवा सृजनहार के रूप में?''

यूहन्ना की गवाही

जब यीशु के चेले अन्धकारभरी शामों में तारों को एकटक देख रहे होते थे तो उन्हें सपने में भी इस बात की दूर–दूर तक संभावना नहीं नज़र आती होगी कि उन तारागणों के रचनेवाले की उपस्थिति उनके मध्य बनी रहती होगी। यहाँ तक कि उसके पुनरूत्थान के पश्चात्, उन्होंने नयी आँखों से यीशु को देखा और इससे पूर्व कि वे पृथ्वी छोड़ते, यीशु ने उन पर अपनी वास्तविक पहचान की रहस्य की पर्तें खोलनी शुरू कर दीं।

अपने प्रभु के वचनों को पुनः स्मरण कर दोहराते हुए यूहन्ना अपने सुसमाचार की शुरूआत इस बात का प्रगटीकरण करते हुए करता है कि यीशु कौन हैं :

''आदि में वचन (लोगोस) था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। . .... सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ .... उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।'' (यूहन्ना 1:1, 3–4)

हालांकि वैज्ञानिक अभी इस बात पर ही विश्वास करते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति शून्य से हुई है, वे हमें यह बताने में सक्षम नहीं हैं कि इन सब बातों की शुरूआत करने के पीछे कौन था वहाँ पर। यूहन्ना इस बात को प्रगट करता है कि सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व ''आदि में वचन था'' और ''परमेश्वर के साथ'' था।

अतः आदि में वचन कौन और क्या था? यूहन्ना के आगामी शब्द इस बात को स्पष्ट कर देते हैं कि वह कौन है जिसके विषय में यह बात कही जा रही है ''वचन परमेश्वर था।''[7]

एक यहूदी होने के नाते, यूहन्ना एक ही परमेश्वर में विश्वास करता था परन्तु यूहन्ना यहाँ पर दो हस्तियों के विषय में बात कर रहा है, परमेश्वर और वचन। यहोवा विटनेस के अनुगामी, जो यह सिखाते हैं कि यीशु की रचना की गयी थी, त्रुटियोंवश इस पद्यावतरण का अनुवाद इस प्रकार करते हैं जिसका अर्थ हो कि वचन परमेश्वर के स्थान पर परमेश्वर है। परन्तु नये नियम के शास्त्री एफ0एफ0 ब्रूस लिखते हैं कि ''शब्द रचना ''परमेश्वर'' को दूसरे अर्थों में अनुवादित करना वीभत्स रीति से गलत अनुवाद करना है क्योंकि विधेय के निर्माण में संज्ञा के साथ अनिश्चित उपपद की गलती हो जाना स्वाभाविक है।''[8]

अतः, यूहन्ना पवित्र आत्मा की अगुवाई में हमें बताता है :

1. सृष्टि से पूर्व ''वचन'' विद्यमान था।
2. ''वचन'' वह सृष्टिकर्त्ता है जिसने सब कुछ रचा।
3. ''वचन'' परमेश्वर है।

अतः यूहन्ना ने गहराई से हमें यह बताया है कि वचन सनातन है, उसी ने सब कुछ रचा और जो परमेश्वर है परन्तु वह हमें यह नहीं बताता कि वचन एक साम्थर्य है या कि एक व्यक्ति, जब तक कि पद 14 नहीं आ जाता।

''और वचन देहधारी हुआ .... और हमारे बीच में डेरा किया'' वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।'' (यूहन्ना 1 : 14)

यहाँ यूहन्ना स्पष्ट रूप से यीशु की ओर संकेत करता है। इसके अतिरिक्त अपनी पत्रियों में वह इसे प्रमाणित भी करता है :

''...... जो आदि से था, जिसे हम ने सुना और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन् जिसे हमने ध्यान से देखा; और हाथों से छुआ। वह यीशु मसीह है, जीवन का वचन।'' (1 यूहन्ना 1: 1)

यूहन्ना हमें बताता है कि ''ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे उसने न बनाया हो।'' यदि कोई भी वस्तु उससे अछूती नहीं है, तो यह बात इस बात का मार्गदर्शन कराती है कि यीशु एक रचे गये प्राणी नहीं हो सकते थे और यूहन्ना के अनुसार, वचन (यीशु) परमेश्वर है।

पौलुस की गवाही

यूहन्ना से भिन्न, प्रेरित पौलुस (पूर्व नाम शाऊल) था जो बैर रखने वाला शत्रु और मसीहियों को सताने वाला था जब तक कि यीशु ने एक दर्शन द्वारा स्वयं को उस पर प्रकट नहीं किया। कई वर्षों पश्चात् पौलुस कुलुस्सियों पर प्रगट करता है कि उसने यीशु की पहिचान से क्या शिक्षा प्राप्त की थी :

''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई .... सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं और वहीं सब वस्तुओं में प्रथम है और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।'' (कुलु0 1 : 15–17 एन ए एस बी)

पौलुस इस प्रसंग में कई महत्वपूर्ण बातें प्रकट करता है :

1. यीशु परमेश्वर का वास्तविक प्रतिरूप हैं।
2. यीशु सारी सृष्टि में पहिलौठे हैं।
3. सारी वस्तुएं यीशु के द्वारा सृजी गयी हैं।
4. यीशु सृष्टि की उत्पत्ति का कारण हैं।
5. यीशु सारी वस्तुओं के पूर्व से विद्यमान हैं।
6. यीशु सृष्टि को एक साथ स्थिर रखते हैं।

''परमेश्वर का वास्तविक प्रतिरूप'' से क्या तात्पर्य है? ब्रूस टिप्पणी करते हुए कहते हैं : ''मसीह को परमेश्वर का प्रतिरूप कहकर बुलाने का तात्पर्य यह कहना है कि उसमें परमेश्वर का अस्तित्व और स्वभाव सिद्ध रीति से दिखायी पड़ चुका है – कि उसमें अदृश्य वस्तुएं दृश्यमान हो उठी हैं।''[9] अतः 'परमेश्वर के अस्तित्व का मसीह में दृश्यमान होना यीशु की समानता' उनके स्वयं के द्वारा फिलिप्पुस को कहे गये वचनों के द्वारा प्रकट होती है ''जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।'' (यूहन्ना 14 : 9)

पद 15 में ''पहिलौठा'' के लिये यूनानी शब्द (प्रोटोटोकोस) का तात्पर्य ''जन्म के बाद वाला'' के सांसारिक अर्थ के स्थान पर ''सर्वशक्तिमान'' है।[10] ब्रूस के अनुसार, पौलुस ''मसीह के पूर्व में विद्यमान होने और सृष्टि में विश्वरचना सम्बन्धी क्रियाओं में सहभागिता'' रखने का हवाला देता है और '' न केवल यीशु की प्राथमिकताओं वरन् उनकी प्रमुखताओं की ओर भी संकेत करता है।''[11] इस बात को जो स्पष्ट करता है वह पद 16 है जो हमें बताता है कि सृष्टि में सारी वस्तुएं यीशु मसीह के द्वारा और उन्हीं के लिये सृजी गईं।

पद 17 में हम देखते हैं कि सनातन मसीह समस्त सृष्टि का बोझ उठाए हुए हैं। पौलुस के अनुसार हरेक कण, डीएनए तन्तु, और अरबों आकाशगंगाएँ यीशु मसीह की सामर्थ्य के द्वारा एक साथ स्थिर हैं। अतः इस प्रकार यीशु ही वह प्रथम हैं जिनके द्वारा सभी वस्तुएँ सृजी गयी हैं और जिनके लिए सृजी गयी हैं और वहीं एकमात्र हैं जो इन सभों को स्थिर किये रहते हैं।

इब्रानियों की गवाही

नये नियम की पुस्तक इब्रानियों[12] भी यीशु को सब वस्तुओं के सृजनहार के रूप में प्रदर्शित करती है। इसका प्रारम्भिक अनुच्छेद पौलुस द्वारा कुलुस्सियों को कहे गये वचनों को परावर्तित करता है :

''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप–दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भांति–भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं। जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है। वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है। (इब्रानियों 1:1–3अ)

यूहन्ना और पौलुस के प्रकटीकरण के समान, इब्रानियों हमें बताता है कि इससे पहिले कि यीशु मनुष्य रूप धारण करते, परमेश्वर ने इस भूमण्डल की रचना उनके द्वारा की और इब्रानियों यीशु मसीह को एक ऐसे रूप में भी प्रगट करता है जो इसे संभालते हैं।

पद 3 यीशु को ''परमेश्वर के स्वभाव का उचित प्रतिरूप और शुद्ध छाप'' के रूप में बताता है।[13] इस यूनानी शब्द का यहाँ पर तात्पर्य है कि ''पुत्र ज्योर्तिमय है, परमेश्वर की महिमा की महिमामयी किरण पुंज''[14]। यह कथन कि यीशु सनातन परमेश्वर की ''शुद्ध छाप'' हैं इस बात को प्रमाणित करता है कि प्रेरित विश्वास करते थे कि यीशु सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर हैं।

इब्रानियों का लेखक आगे हमें बताता चलता है कि यीशु न केवल भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ हैं वरन् वह स्वर्गदूतों से भी ऊपर विराजमान हैं :

''यह दर्शाता है कि परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। (इब्रा. 1 : 4)

जॉन पाइपर इस बात की व्याख्या करते हैं कि क्यों यीशु विस्तृत रूप से स्वर्गदूतों से सर्वश्रेष्ठ हैं :

''स्वर्ग में किसी भी स्वर्गदूत ने कभी भी उतना आदर और उतना प्रेम नहीं पाया है जितना सब समयों में पुत्र ने अपने पिता से पाया है। जैसा कि स्वर्गदूत उतने ही महान् होते हैं जितने वे अद्भुत होते हैं तो वे पुत्र के विरूद्ध नहीं रहते ..... परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूत नहीं है .. ... यहाँ तक कि सर्वोच्च आसन पर विराजमान स्वर्गदूत भी नहीं। उल्टे परमेश्वर कहता है, 'परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।'' (इब्रानियों 1 : 6)। परमेश्वर का पुत्र उन सभी आदर के योग्य है जो स्वर्ग में सेवा टहल करने वाले दे सकते हैं ...... हमारी ओर से धन्यवाद कहलाने योग्य नहीं।''[15]

तत्पश्चात् इब्रानियों का लेखक यीशु के ईश्वरत्व को उजागर करता है :

''परन्तु पुत्र से वह (पिता) कहता है, 'हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा ...... '' (इब्रानियों 1:8 विस्तार)

बाद में इब्रानियों में हम सीखते हैं कि यीशु मसीह ''कल, आज और युगानुयुग एक सा है,'' उसके अनन्त ईश्वरत्व का एक स्पष्ट वक्तव्य (इब्रा. 13 : 8)। एक रचा गया प्राणी कल जैसा रहा हो वैसा आज नहीं हो सकता क्योंकि बीच में एक ऐसा समय रहा होगा जब उसका अस्तित्व नहीं था। इब्रानियों में वर्णित इस अनुच्छेद का अनुवाद इन अर्थों में इस तथ्य से परे हटकर करना कि यीशु वही परमेश्वर हैं जिनके विषय में पुराना नियम बताता है, इनके अतिरिक्त कोई दूसरा है जिसने पिता और पवित्र आत्मा संग मिलकर सृष्टि की रचना की नितान्त कठिन होगा।

प्रेरित इस बात को जानकर अवश्य भयभीत रहे होंगे कि वह जिसे उन्होंने लहू बहाते और रोमी क्रूस पर लटकते देखा था वही है जिसने उस वृक्ष की रचना की जिससे यह बना था और उन मनुष्यों की भी जिन्होंने उसे इस पर कीलों से ठोंक दिया।

वही परमप्रधान

आरम्भिक मसीहियों पर रोमवासियों द्वारा सीज़र की महिमा को चुराने (खण्डित करने) तथा यहूदियों द्वारा परमेश्वर (याहवे) की महिमा को चुराने (खण्डित करने) का दोष लगाया गया था। कुछ लोगों द्वारा मसीहियत की आलोचना ''यीशु को अत्यधिक केन्द्र बिन्दु मानने'' के कारण की गयी है परन्तु क्या यही वह बात है जिस पर प्रेरितों ने सोचा–विचारा? आइये पौलुस से पुनः उन बातों को सुनते हैं जो यीशु के विषय में वह कुलुस्सियों को लिखता है :

''वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे। क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे।'' (कुलु0 1 :19 ई एस वी)

पौलुस लिखता है कि परमेश्वर यीशु को सृष्टि के परमप्रधान के रूप में पाकर प्रसन्न है परन्तु पुराना नियम स्पष्ट रूप से शिक्षा देता है कि किसी रचनात्मक प्राणी पर से परमेश्वर अपनी परमप्रधानता को कभी नहीं नकारेगा। (निर्ग0 6:4, 5, भ0सं0 83:18; नीतिवचन 16:4; यशा0 42:11)। यशायाह उन्मुक्त कंठ से परमेश्वर की (याहवे की) परमप्रधानता के विषय में बात करता है।

''हे पृथ्वी के दूर–दूर के देश के रहने वालों, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूँ; और दूसरा कोई और नहीं है। मैं ने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा, प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख झुकेगा और प्रत्येक के मुख से मेरी ही शपथ खाई जाएगी।'' (यशायाह 45:22, 23 एन एल टी)

परन्तु यीशु और याहवे दोनों ही कैसे परम प्रधान हो सकते हैं? उत्पत्ति नामक पुस्तक में संभवतः इस सम्बन्ध में सूत्र मिल सकता है जहाँ सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के लिए जो इब्रानी शब्द (इलोहिम) प्रयोग किया गया है वह बहुवचन है। डॉ0 नॉरमन जैसलर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, ''बाइबिल के अनुसार बोलते हुए, पर्याप्त से भी अधिक प्रमाण इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए मौजूद हैं कि धर्मशास्त्र द्वारा परमेश्वर का बुनियादी स्वरूप बहुलता में एकता के रूप में चित्रित किया गया है।''[16]

पौलुस यीशु के लिये उन्हीं आदरसूचक गुणों का बखान करता है जो यशायाह याहवे के गुणों का बखान करने के लिये करता हैः

''जिस ने परमेश्वर के रूवरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।'' (फिलिप्पियों 2:6 – 11 एन एल टी)

यह अनुच्छेद प्रगट करता है कि यीशु द्वारा मनुष्य रूप धारण करने से पूर्व, उन्हें परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। पौलुस भी हमें बताता है, ''कि हर एक घुटना झुकेगा और हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है।''

मसीह से सात सौ वर्षों से भी अधिक पहले, परमेश्वर ने यशायाह के द्वारा हमसे यह कहा कि वही एकमात्र परमेश्वर, प्रभु और उद्धारकर्त्ता हैः

''मुझ से पहिले कोई ईश्वर न हुआ और न मेरे बाद भी कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ और मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्त्ता नहीं।'' (यशायाह 43:10, 11)

पुराने नियम में भी हमें बताया गया है कि याहवे (यहोवा) ने अकेले ही सृष्टि की रचना की। वही है ''जिसके लिए हर एक घुटना झुकेगा।'' वही ''प्रभु, इस्राएल का राजा'', ''छुड़ाने वाला'', ''आदि और अन्त'' है। दानिय्येल उसे ''प्राचीन'' कहकर बुलाता है। जकर्याह परमेश्वर के विषय में इस प्रकार कहता है, ''राजा, सेनाओं का यहोवा जो पृथ्वी का न्याय करेगा।''

परन्तु नये नियम में हम सुनते हैं कि यूहन्ना यीशु को ''उद्धारकर्त्ता'', ''अलफा और ओमिगा'', ''पहिला और पिछला'', ''राजाओं का राजा'' और ''प्रभुओं का प्रभु'' कहकर बुलाता है। पौलुस हमें बताता है, ''हर एक घुटना यीशु के सामने झुकेगा।'' यीशु ही एकमात्र वह है जिसके विषय में प्रेरित हमें बताते हैं कि वह हमारे अनन्तकालीन पड़ाव का न्याय करेगा। यीशु सम्पूर्ण सृष्टि का परमप्रधान प्रभु है।

पैकर तर्क देते हैं कि मसीहियत का अर्थ तभी पूरा होता है जब मात्र यीशु ही सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर हों :

''यदि यीशु एक अति प्रशंसनीय, परमेश्वरीय स्वभाव वाले मनुष्य बहुत दिनों तक न बने रहे होते तो नया नियम जो कुछ उनके जीवन और कार्यो के विषय में बताता है उस पर विश्वास करने के मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ बिल्कुल पहाड़ों के समान होतीं।''

''परन्तु यदि यीशु वही व्यक्तित्व है जिसे आदि का वचन, सृष्टि की रचना में पिता का प्रतिनिधि बताया गया, ' उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि रची है' (इब्रा0 1:2 आर वी), तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं यदि सृजनात्मक सामर्थ्य के नित नये कार्य इस जगत् में उसके आगमन को, इसमें उसके जीवन को और यहाँ से उनके निकास को चिन्हित करते हैं। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि वह, जो जीवन का लेखक है, उसे मृतकों में से जीवित हो जाना चाहिये ...... पनुः देहधारण स्वयं में एक अनसुलझा रहस्य है, परन्तु यह उन दूसरी अन्य बातों को जो नये नियम में विद्यमान हैं अर्थपूर्ण बनाता है।''[17]

निष्कर्ष

यदि यीशु ही याहवे (यहोवा) हैं तब तो मसीही सन्देश यह है कि परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर आया, मनुष्यों को उस पर थूकने की, उसकी निन्दा करने की और सबसे बड़े बलिदान के रूप में

उसे कीलों से ठोंककर क्रूस पर चढ़ा देने की अनुमति प्रदान की। क्योंकि परमेश्वर का सिद्ध न्याय स्वयं परमेश्वर द्वारा हमारे पापों और अधार्मिकता का दाम चुकाये जाने पर ही संतुष्टिजनक हो सकता था। न कोई स्वर्गदूत न कोई रचा गया प्राणी पर्याप्त होता। इस तरह का त्यागपूर्ण कार्य परमेश्वर के प्रेम की विशालता के साथ–साथ उसके श्रेष्ठ मूल्य को भी दर्शाता है जो वह हम में से प्रत्येक पर ठहराना चाहता है ख्देखें '' व्हाई जीसस? (यीशु क्यों?), और ठीक यही वह बात है जिसकी शिक्षा प्रेरितों ने दी और हियाव बान्धकर जिसका प्रचार किया।

इफिसुस के प्राचीनों से विदा लेने वाले शब्दों में पौलुस उनका उत्साह यह कहकर बढ़ाता है, ''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।'' (प्रेरितों के काम 20:28 एन ए एस बी)। पौलुस जकर्याह की उस भविष्यवाणी को प्रतिध्वनित कर रहा है जहाँ परमेश्वर (याहवे) कहता है,

''उस समय यहोवा यरूशलेम के निवासियों को मानो ढाल से बचा लेगा.... तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएंगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते –पीटते हैं।'' (जकर्याह 12:8 अ, 10ब)

जकर्याह इस बात को प्रगट करता है कि वह जिसे क्रूस पर बेधा गया वह स्वयं परमेश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरा न था। अतः हम देखते हैं कि यीशु मसीह पुराने और नये नियमों को एकसाथ संजोकर इस प्रकार रखते हैं जैसे कि दो अलग किस्म के वाद्ययन्त्रों को एक सुन्दर संगीत की रचना के लिये एक साथ सुर और ताल में पिरोया जाता है। जब तक कि यीशु परमेश्वर नहीं हो जाते, मसीहियत अपने मुख्य केन्द्रबिन्दु से भटक जाती है, परन्तु यदि यीशु ही परमेश्वर हैं तो दूसरे अन्य बड़े मसीही सिद्धान्त एक साथ उचित रीति से खाँचे में बैठ जाते हैं जैसे कि किसी पहेली के खण्ड।'' क्रीफ्ट और टेसेली व्याख्या करते हैं :[18]

- ''यदि मसीह अलौकिक हैं, तब तो पुर्नजन्म अथवा परमेश्वर द्वारा ''पुनः देहधारण'' इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना बन जाती है। यह इतिहास की बुनियाद है। यह सब बातों को परिवर्तित कर देती है।''
- ''यदि मसीह ही परमेश्वर हैं, तब जब वह क्रूस पर की मृत्यु को प्राप्त हुए, तो स्वर्ग के वे द्वार जो पाप के कारण बन्द कर दिए गये थे हमारे लिये अदन के बाद से प्रथम बार खोल दिए गये। प्रत्येक मनुष्य जो पृथ्वी पर हैं उनके लिये इतिहास में कोई भी घटना इससे बढ़कर महत्वपूर्ण नहीं हो सकेगी।''
- ''यदि मसीह ही परमेश्वर हैं, तो, चूंकि वह सर्वशक्तिमान हैं और अभी यहीं उपस्थित हैं, वह आपको और आपके जीवन को ठीक इसी समय शून्य में बदल सकते हैं और कोई दूसरा ऐसा सम्भव रीति से नहीं कर सकता।''
- ''यदि मसीह अलौकिक हैं, तो उनका हमारे सम्पूर्ण जीवनों पर अधिकार है, जिसमें हमारे मनों के विचार और हमारा आंतरिक जीवन दोनों शामिल हैं।''

प्रेरितों ने यीशु को अपने जीवनों का प्रभु मानकर ग्रहण किया, सृजनहार होने के नाते उसके विषय में लिखा और परमप्रधान मानकर उसकी भक्ति की। ये ठोस चश्मदीद गवाह खराई से विश्वस्त थे कि परमेश्वर यीशु मसीह के रूप में पृथ्वी नामक ग्रह पर अवतरित हुआ और राजाओं के राजा और प्रभुओं का प्रभु के रूप के साथ–साथ हमारे अंतिम न्यायी के रूप में वापस लौटेगा। तीतुस को लिखे अपने पत्र में, पौलुस यीशु की पहिचान और हमारे जीवनों के लिये परमेश्वर के उद्देश्य को प्रगट करता है :

''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात् **अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा** के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।''[19] (तीतुस 2:11–13 एन एल टी)

अनुसूची

1. विल ड्यूरेन्ट, सीजर एण्ड क्राइस्ट, द स्टोरी ऑफ सिवलीजेशन का वाल्यूम 3 (न्यूयॉर्क : साइमन और सशट्सर, 1972), 563

2. ए0 एच0 मैकनाइल, इण्ट्रोडक्शन टू द न्यू टेस्टामेन्ट (ऑक्सफोर्ड : क्लैरेन्डन प्रैस, 1955), 463, 464

3. दोनों नियमों में परमेश्वर और यीशु को सम्बोधित करने के लिये 'प्रभु' (स्वतक) उपाधि मुक्त रूप से प्रयोग की गयी है। पुराने नियम में प्रभु के लिये इब्रानी शब्द अदोनाई था। सत्तर से अस्सी वर्ष की अवस्था वाले लोगों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों (सैपचूआजिन्ट) और नये नियम में 'प्रभु' शब्द का अनुवाद कूरिओस है। 'अदोनाई' और 'कूरिओस' दोनों परमेश्वर के लिये यहूदियों द्वारा प्रयोग में लाये जाते थे।'' जॉश मैक्डॉवेल एवं बर्ट लारसन, जीसस : ए बिबलिकल डिफेन्स ऑफ हिज़ डेइटी (सैन बरनारडिनो : हिअर्स लाइफ, 1983), 33

4. पॉल एल मेयर, इ डी, इयुसबिअस, द चर्च हिस्ट्री (ग्रैंड रैपिडस्, एम आई : क्रिगेल, 1999), 149

5. यद्यपि अधिकाँश आरम्भिक मसीही यीशु के ईश्वरत्व में विश्वास करते थे, परन्तु कलीसिया इस बात का स्पष्ट उल्लेख नहीं करती थी कि उसका क्या अभिप्राय है जब तक कि निकाया की महासभा 325ई0 में नहीं हुई, जब रोमी शासक कॉन्स्टेनटाइन ने

एरिअस के दृष्टिकोण कि यीशु एक रचे गये प्राणी थे पर वार्ता के लिये कलीसियाई अगुवों को एकसाथ एकत्रित न कर लिया। हालांकि, नये नियम में यीशु के विषय में प्रेरितों के कहे गये शब्दों के अर्थ पर एक क्षणिक वाद–विवाद के पश्चात्, सभी परन्तु 318 कलीसियाई अगुवों में से दो ने ठोस रूप में इस मसीही मत कि वह (यीशु) सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर हैं, पिता और पवित्र आत्मा के समतुल्य और समान रूप से सनातन हैं पर सहमति जताई। ख देखें ''मोनालिसास् स्मिर्क'' (मोनालिसा की कटु मुस्कान),

6. देखें जीसस डॉक (यीशु. लेख), नये नियम की विश्वसनीयता की खोजबीन के लिये।

7. मार्टिन लिखते हैं, ''द इम्फेटिक डाइग्लॉट् और न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन (यहोवा विटनेसेज़ का) के अनुवादों के विपरीत यूनानी व्याकरण रचना किसी भी तरह से इस विषय में कोई सन्देह नहीं रखती कि मूल लेखन को दूसरी भाषा में व्यक्त करने का यही सम्भव तरीका है ..... यहोवा विटनेस के मतावलम्बियों ने अपने न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन एपेन्डिक्स 773–777 में इसी विषय पर यूनानी मूल लेखन पर संदेह व्यक्त किया, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि यदि यीशु और यहोवा स्वभाव में ''एक'' हैं तो उनका धर्मसिद्धान्त खरा नहीं उतर सकता .....'' वॉल्टर मार्टिन, 'द किंगडम ऑफ द कल्टस् (मिनीअपॉलिस, मिनः बैतने, 1974), 75

8. एफ0 एफ0 ब्रूस, 'द डेइटी ऑफ क्राइस्ट' (मैनचेस्टर, इंग्लैण्ड : राइटस् ख्सैण्डबैक, लिमिटेड, 1964

9. एफ0 एफ0 ब्रूस, '' द 'क्राइस्ट हिम्' ऑफ कोलोसियन्स् 1:15–20, ''बिबलियोथेका सैक्रा (अप्रैल–जून 1984) : 101

10. डी0 गथरी एवं जे0 ए0 मॉटयर्, 'द न्यू बाइबिल कॉमेन्ट्री : संशोधित (ग्रैंड रैपिडस्, एम आई : ईर्डमान्स्, 1973), 1144

11. ब्रूस, 'हिम्' , 101–102

12. यद्यपि इब्रानियों का लेखक अज्ञात है, परन्तु कुछ विद्वानों का यह मत है कि यह पौलुस के द्वारा लिखी गयी।

13. द एम्प्लीफाइड बाइबिल, ज़ॉन्डरवेन्

14. कैनेथ एस0 वेस्ट, ' वर्ड स्टडीज़ इन द ग्रीक न्यू टेस्टामेन्ट, वॉल्यूम ⅰ (ग्रैंड रैपिडस्, एम आई :, ईर्डमान्स्, 1986), 41

15. जॉन पाइपर, 'द प्लैजर्स ऑफ गॉड' (सिस्टर्स, ओ आर : मल्टनोमाह, 2000), 33

16. नॉरमन जैसलर एवं पीटर बॉकिनो, ' अनशेकेबेल फाउण्डेशनस् (मिनीअपॉलिस, एम एन : बैतने हाउस, 2001), 297

17. जे0 आई0 पैकर, नोइंग गॉड (डॉनर्स ग्रूव, आई एल : इण्टरवर्सिटी प्रैस), 54

18. पीटर क्रीफ्ट एवं रोनाल्ड के0 टेसेली, 'हैण्डबुक ऑफ क्रिश्चियन अपॉलिजेटिक्स' (डॉनर्स ग्रूव आई एल : इण्टरवर्सिटी प्रैस, 1994), 152

19. ''यूनानी व्याकरण का ग्रैनविल तीव्र नियम बताता है कि जब दो संज्ञाएं 'काई' (और) से जोड़ी जातीं हैं और पहली संज्ञा से पूर्व उपपद होता है और दूसरी संज्ञा में नहीं होता है, तब दोनों संज्ञाएं एक ही बात को प्रकट करतीं हैं, अतः महान् परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता दोनों यीशु मसीह की ओर संकेत करते हैं।'' (द मूडी हैण्डबुक ऑफ थियोलॉजी, पृष्ठ 225)